



कछुए की बाँसुरी

ब्राज़ील की लोक कथा

एक बार की बात है, किसी नदी के किनारे कछुआ अपनी बाँसुरी बजाया करता था। जंगल के सभी जानवर – शेर, हाथी, तितलियाँ, साँप और बंदर सभी उसकी बंसी की धुन पर झूम-झूम कर नाचते। एक दिन एक आदमी ने कछुए की बाँसुरी सुनी। “आ...ह,” उसने सोचा, “यह तो कछुआ संगीत बजा रहा है। अभी उसका मांस बहुत स्वादिष्ट होगा।” उसने कछुए को पुकारा: “दोस्त कछुए, अपनी सुंदर बंसरी दिखाना तो ज़रा।”

कछुआ धीरे-धीरे दरवाज़े तक आया और उसने अपनी बंसी आगे कर दी। कछुए को देखते ही वह आदमी उसे गर्दन से दबोचकर दौड़ने लगा। कछुए ने मदद के लिए चिल्लाने की कोशिश की, लेकिन उसकी आवाज़ ही नहीं निकली। आँखें मींचकर अपनी बाँसुरी को कसकर थामे वह सोचने लगा, “मेरा भाग्य ज़रूर बदलेगा।”

अपनी कुटिया में पहुँचकर उस आदमी ने कछुए को एक पिंजड़े में बंद कर दिया। फिर अपने बच्चों की ओर मुड़कर बोला, “इस कछुए को पिंजड़े से बाहर निकलने मत देना।” और वह अपने खेतों की ओर चला गया। बच्चे बाहर खेलने लगे। पिंजड़े में बंद उदास कछुआ बच्चों के पिता की बात सोचने लगा। फिर अपनी बाँसुरी पर मधुर धुन बजाने लगा।





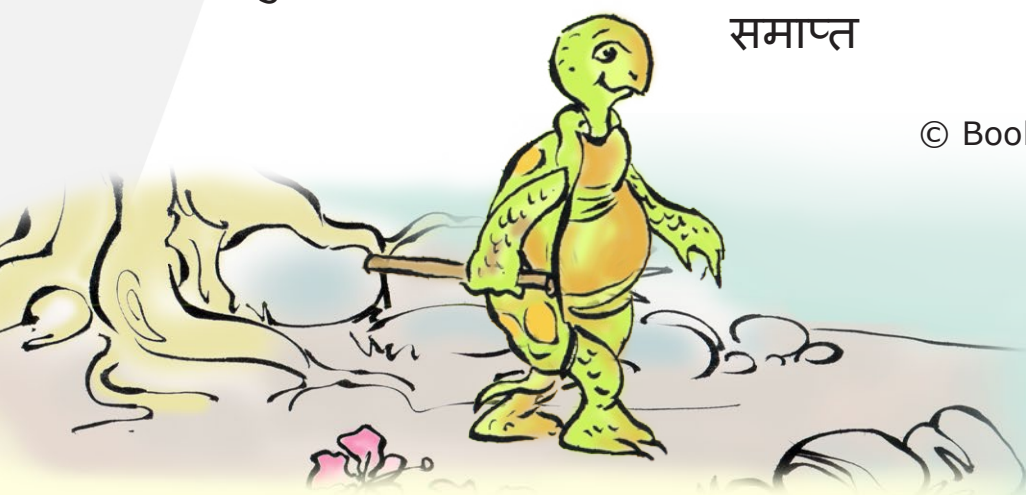
बच्चे दौड़े-दौड़े पिंजड़े के पास आ गए। “क्या यह तुम बजा रहे हो?” सभी ने एक साथ आँखें बड़ी-बड़ी करके पूछा। “हाँ,” कछुए ने कहा। वह बंसी बजाता रहा, क्योंकि वह देख रहा था कि बच्चे खुशी से झूम रहे हैं।

वह रुका और बोला, “मैं बाँसुरी बजाने से ज़्यादा अच्छा नाचता हूँ। वो बोला, क्या तुम लोग देखना चाहोगे?” “ओ, हाँ, ज़रूर।” छोटा बच्चा चिल्ला उठा। “चलो, मैं तुम्हें एक ही साथ नाच दिखाऊँगा और बाँसुरी भी सुनाऊँगा। कछुए बोला, लेकिन उसके लिए तुम्हें पिंजड़ा खोलना होगा। यहाँ तो एकदम जगह ही नहीं है।” छोटे बच्चे ने पिंजड़ा खोल दिया।

कछुआ नाचने और बंसी बजाने लगा। बच्चे खुशी से खेलखिलाने लगे, तालियाँ बजाने लगे। ऐसा अद्भुत दृश्य उन्होंने पहले कभी न देखा था। फिर कछुआ रुक गया। “रुको मत।” बच्चे चीख उठे। “ओह,” कछुआ कराहा। “मेरे पैर अकड़ गए हैं। अगर मैं उन्हें ढीला करने के लिए थोड़ा-सा चल लेता!” “बहुत दूर मत जाना,” छोटी बच्ची ने सावधान किया। “एकदम से वापिस आ जाना।” “अरे, डरो मत,” कछुआ बोला। “तुम बस यहीं इंतज़ार करो।”

कछुआ जंगल की तरफ़ रेंगने लगा। जैसे ही वह बच्चों की आँखों से ओझल हुआ कि सरपट अपने घर की ओर भाग चला। कछुए को फिर कभी किसी ने नहीं देखा। लेकिन अगर तुम अपने कानों पर ज़रा ज़ोर डालो तो जंगल में कछुए की बाँसुरी की मीठी धुन आज भी सुन सकते हो।

समाप्त



© BookBox. All Rights Reserved.
www.bookbox.com

Click below to follow us:

